१२. पुरंदर का घेरा और संधि

सूरत पर छापा : इस विजय के बाद शिवाजी महाराज चुप नहीं रहे । जब औरंगजेब की सेना महाराष्ट्र में उपद्रव मचा रही थी तब बादशाह पर धाक जमाने के लिए शिवाजी महाराज ने सूरत शहर पर छापा मारा । कहाँ पुणे और कहाँ सूरत ! उस समय सूरत मुगल साम्राज्य का बहुत बड़ा व्यापारिक केंद्र था । धन-धान्य से परिपूर्ण । सूरत पर शिवाजी महाराज ने आक्रमण करके लाखों रुपये लूटे लेकिन सूरत पर आक्रमण करने पर भी शिवाजी महाराज ने अपनी नीति को नहीं त्यागा । चर्च अथवा मसजिद को हाथ नहीं लगाया । महिलाओं को कष्ट नहीं पहुँचाया ।

सूरत पर हुए इस आक्रमण से औरंगजेब बहुत चिढ़ गया । उसने मराठों का राज्य नष्ट करने का निश्चय किया । उसने अपने शक्तिशाली सेनापति मिर्जाराजे जयसिंह को शिवाजी महाराज पर आक्रमण करने के लिए भेजा । उसके साथ दिलेर खान नाम का अपना विश्वसनीय सरदार भी भेजा । साथ में अपार धनराशि तथा गोला-बारूद भी दिया । जयसिंह और दिलेर खान अपनी विशाल सेना के साथ दक्षिण में आ पहुँचे । स्वराज्य के लिए यह बहुत बड़ा संकट था ।

सूरत से लौटते ही शिवाजी महाराज को सन १६६४ में कर्नाटक से एक दुखद समाचार मिला । शिकार के समय शहाजीराजे दुर्घटनाग्रस्त होकर चल बसे थे । शिवाजी

पुरंदर किला

महाराज और जिजामाता पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा । शिवाजी महाराज ने मातोश्री को सांत्वना दी और उन्हें इस दुख से उबार लिया ।

मुगलों द्‌वारा पुरंदर का घेरा : शिवाजी महाराज का पुरंदर किला भव्य और मजबूत था । दिलेर खान जानता था कि इस किले को जीते बिना शिवाजी महाराज को पराजित करना कठिन है । इसलिए उसने पुरंदर को घेर लिया । उसकी सेना बहुत विशाल थी लेकिन पुरंदर का किलेदार मुरारबाजी बड़ा ही दृढ़ निश्चयी और पराक्रमी वीर था । उसके सैनिक बड़े ही वीर पराक्रमी थे । इन सारे वीर सैनिकों को लेकर मुरारबाजी लड़ने के लिए तैयार हुआ ।

दिलेर खान की तोपें गरजने लगीं । तोपों के लाल-लाल गोले किले पर बरसने लगे लेकिन मुरारबाजी और उसके मावले पीछे नहीं हटे । वे दुगुने जोश से लड़ने लगे । मुगलों ने तोपों की वर्षा की । दुर्ग का बुर्ज ध्वस्त हुआ । मुगल मचान में घुस आए । दिलेर खान ने मचान जीत लीया । मराठों ने मचान के ऊपर के बाले किले का आश्रय लिया । वे लड़ते ही रहे । दिलेर खान अपनी छावनी से यह लड़ाई देख रहा था ।

मुरारबाजी क्रोध से लाल हो गया था । उसने पाँच सौ मावले चुने । उन्हें लेकर मुगलों पर आक्रमण करने का उसने निश्चय किया । ऊपरी किले का दरवाजा खुल गया । 'हर-हर महादेव' के नारों के साथ मुरारबाजी और उसके मावले मुगलों पर टूट पड़े । थोड़ी देर तक घमासान युद्‌ध हुआ । मुगलों की सेना विशाल थी मगर मराठों ने उसको पराजित कर दिया । अंत में मुगल पीछे हट गए । दिलेर खान के डेरे की ओर वे अपनी जान लेकर भागने लगे ।

मुरारबाजी ने उनका पीछा करना शुरू किया । मुरारबाजी की सेना दिलेर खान की छावनी में घुस गई । छावनी में शोर मच गया । चारों ओर अफरा-तफरी, शोरगुल और चीख-पुकार मच गई । दिलेर खान बड़ी फुर्ती से हाथी के हौदे में बैठ गया । सामने देखा तो उसे मुरारबाजी दिखाई दिया । मुरारबाजी की तलवार किसी की छाती में, किसी के सिर में, तो किसी के गले में घुस रही थी । मुरारबाजी को कोई भी रोक नहीं पा रहा था । उसका पराक्रम देखकर दिलेर खान स्तब्ध रह गया ।

मुरारबाजी का अतुलनीय पराक्रम : दिलेर खान को देखकर मुरारबाजी क्रोधित हुआ । 'मारो, काटो, लाशों के ढेर लगा दो,' चिल्लाकर वह शत्रु पर टूट पड़ा । उसकी तलवार तेजी से घूमने लगी । जो बीच में आया, वह वहीं मारा गया । इस अकेले वीर को मुगलों ने चारों ओर से घेर लिया । इतने में दिलेर खान हौदे में से चिल्लाया, "ठहरो ।" मुगल सैनिक रुक गए । क्षण भर के लिए वे पीछे हट गए । खान ने मुरारबाजी से कहा, "मुरारबाजी, तुम जैसा पराक्रमी मैंने आज तक नहीं देखा । तुम हमारे पक्ष में आ जाओ । हम तुम्हें वचन देते हैं; बादशाह तुम्हें सरदार बनाएँगे । जागीर देंगे । इनाम देंगे ।" मुरारबाजी ने दिलेर खान की बातें सुनीं । क्रोध से उसकी आँखें लाल हो गईं । वह कुद्‌ध होकर बोला, "अरे, हम शिवाजी महाराज के साथी हैं ! तेरा वचन क्यों लेंगे ? हमें किस बात

मुरारबाजी देशपांडे – दिलेर खान : युद्ध प्रसंग

की कमी है ? किसे चाहिए तुम्हारे बादशाह की जागीर ?'' मुरारबाजी खान की ओर लपका और बड़े जोरों से मार-काट करने लगा । दिलेर खान ने हौदे में से बाण छोड़ा । वह बाण मुरारबाजी के गले में घुस गया । वह जमीन पर गिर पड़ा । मावलों ने उसका शरीर उठाया और किले में ले गए । किलेदार के धराशायी होने से उन्हें बड़ा दुख हुआ लेकिन 'एक मुरारबाजी शहीद हो गया तो क्या हुआ ? हम भी वैसे ही वीर हैं । हिम्मत से लड़ेंगे ।' इस दृढ़ निश्चय के साथ वे फिर से लड़ने लगे ।

यह समाचार मिलने पर शिवाजी महाराज को बहुत दुख हुआ । उन्होंने सोचा कि एक-एक किले पर एक-एक वर्ष तक शत्रु के साथ लड़ा जा सकता है परंतु व्यर्थ में हमारे वीर मारे जाएँगे । शिवाजी महाराज यह नहीं चाहते थे ।

पुरंदर की संधि : करें क्या ? जब शक्ति सफल न हुई और युक्ति भी काम न आई तब कुछ समय तक हार मानना ही उचित था । इसलिए शिवाजी महाराज ने मुगलों से संधि करने का निश्चय किया । शिवाजी महाराज स्वयं जयसिंह के पास गए । उसके साथ बड़ी कूटनीति से बातचीत की । उन्होंने कहा, ''मिर्जाराजे, आप राजपूत हैं । हमारा

शिवाजी महाराज–मिर्जाराजे जयसिंह की भेंट

दुख आप जानते हैं । बादशाह के हमलों से महाराष्ट्र बरबाद हो गया है । लोगों की दुर्दशा हुई है । लोग सुखी रहें इसलिए हमने स्वराज्य का कार्य हाथ में लिया है । आप भी यह काम हाथ में लीजिए । हम और हमारे मावले आपके साथ रहेंगे ।'' जयसिंह बड़ा चतुर था । उसने शिवाजी महाराज से संधि करने के लिए कहा । उन्होंने संधि कर ली । इस संधि में शिवाजी महाराज ने मुगलों को तेईस किले और उसके अधीनस्थ चार लाख होन (मुद्रा) का प्रदेश देना स्वीकार किया । यह संधि ई.स. १६६५ में हुई ।

पुरंदर में संधि हुई । जयसिंह ने शिवाजी महाराज को सलाह दी कि वे उसी समय आगरा जाकर बादशाह से मिलें । उनकी सुरक्षा का दायित्व उसने अपने ऊपर लिया । जयसिंह की सलाह पर शिवाजी महाराज ने बहुत विचार किया । शिवाजी महाराज जानते थे 'बादशाह कपटी है, अपने भाइयों के साथ भी उसने विश्वासघात किया है ।' फिर भी उन्होंने बड़ी सावधानी से इस समस्या का सामना करने का निश्चय किया । शिवाजी महाराज ने जयसिंह के पास संदेश भेजा, 'बादशाह से मिलने के लिए मैं आगरा जाने को तैयार हूँ ।'

१. कोष्ठक में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो :

(अ) उस समय ········· मुगल साम्राज्य का बहुत बड़ा व्यापारिक केंद्र था ।
(पुणे, सूरत, दिल्ली)

(आ) पुरंदर का किलेदार ········· बड़ा ही दृढ़ निश्चयी और पराक्रमी वीर था ।
(बाजीप्रभु, तानाजी, मुरारबाजी)

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) शिवाजी महाराज ने सूरत शहर पर आक्रमण क्यों किया ?

(आ) दिलेर खान ने पुरंदर को क्यों घेर लिया ?

(इ) शिवाजी महाराज ने मुगलों के साथ संधि करने का निश्चय क्यों किया ?

(ई) पुरंदर की संधि में शिवाजी महाराज ने मुगलों को कौन-सा प्रदेश देना स्वीकार किया ?

३. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो :

(अ) मुरारबाजी का पराक्रम देखकर दिलेर खान ने उससे क्या कहा ?

(आ) मुरारबाजी ने दिलेर खान को क्या उत्तर दिया ?

४. पाठ में आए हुए नामों के अक्षरों के आधार पर शब्द पूर्ण करो :

(अ) औ -------

(आ) पु -------

(इ) मु -------

(ई) ज -------

(उ) दि -------

उपक्रम

अपने आसपास के किले की सैर करो । उस किले के बारे में शिक्षकों से जानकारी प्राप्त करो ।

6J6427